# अमृत प्रार्थना
## परमात्मा से

हे पूरण परमात्मा,पावन हो जीवात्मा,
विश्व बने धर्मात्मा,सुखी रहे सब आत्मा।
ॐ शांति शांति शांति!
मंदिर में बैठकर अपने घर पर भगवान के सामने इस प्रकार से प्रार्थना करेंगे।

१:हे पूरण परमात्मा...(व्याख्या)

हे प्रभु!आप परिपूर्ण है! जिसकी जो इच्छा होती है, मनोकामना होती है ,आप उसे पूरी कर देते हैं ।लेकिन फिर भी आप पूरे ही रहते हैं, परिपूर्ण रहते हैं। आपके पास कोई कमी नहीं आती है। हमसे कोई कुछ वस्तु मांगे तो हम उसे देते हैं,रोटी देते हैं ,वस्त्र दे दिया, मकान दे दिया, किसी को संपत्ति चाहिए तो धन दे दिया ।जब हम किसी को देते हैं तो हमारे पास कम पड़ जाता है, लेकिन भगवान तो पूर्ण है। सारी दुनिया मांगती रहती है,भगवान सबको देते रहते हैं लेकिन पूर्ण रहते हैं। अतः है प्रभु! आप तो परिपूर्ण है ,ऐसा जान करके मैं आपकी शरण में आया हूं ।हम सभी अपूर्ण है,अधूरे हैं लेकिन एक मात्र आप ही परिपूर्ण है! मां के पास जाऊं तो वह भी अपूर्ण है, पिता भी अपूर्ण हैं। भौतिक गुरु भी अपूर्ण हैं। संसार के सभी लोगों अपूर्ण हैं। अर्थात उनके पास कुछ ना कुछ कमी है ।लेकिन आपके पास कोई कमी नहीं है ।आप परिपूर्ण हैं। और दूसरों की कमियों को भी पूरी कर देते हैं, दूसरों की आवश्यकताओं की भी पूर्ति करते हैं।ऐसा जान करके, हे परिपूर्ण परमात्मा! मैं आपकी शरण में आया हूं !

२:पावन हो जीवात्मा...(व्याख्या)

हम सभी जितने भी जीव हैं, जीवात्मा हैं वे सभी पतित हैं। सब नीचे की ओर गिर रहे हैं। पतन की ओर जा रहे हैं। हमारा शरीर, इंद्रियां, मन ,हमारी बुद्धि  पतन को प्राप्त हो रहे हैं। अतः हे प्रभु! आप पतित पावन हैं। हम आपकी शरण में आए हैं ! आप हमें पावन बनाएं! हमारे पतन को रोककर हमें आप पावन बनाएं! हमारे मन, बुद्धि, चित्त की दिशा ऊपर की तरफ हो अर्थात आपकी तरफ हो।

३:विश्व बने धर्मात्मा...(व्याख्या)

कोई बच्चे से पूछा जाए कि क्यों पढ़ते हो? तो कहता है, मैं डॉक्टर बनने के लिए,सी ए बनने के लिए, अर्थात कोई कुछ ना कुछ बनने के लिए प्रयत्न करता है ।पर हे प्रभु! मैं तो प्रार्थना करता हूं कि मैं धर्मात्मा बनूं और सारे विश्व के लोग भी धर्मात्मा बनें। क्योंकि कोई डॉक्टर होकर भी चोरी छल कपट करता है, अत्याचार करता है। तो पद से नहीं, बल्कि स्वभाव से धर्मात्मा बनें। यह सारा विश्व ही धर्मात्मा बन जाए ।

४:और सुखी रहे सब आत्मा...(व्याख्या)

हे प्रभु! संसार में कोई दुखी ना हो, सब सुखी हो ।किसी के पास किसी प्रकार का कष्ट ना हो, अभाव न हो, दुख ना हो।

ऐसी रोज सुबह प्रार्थना करना चाहिए... हे प्रभु! इस संसार में एक मात्र आप ही परिपूर्ण हैं, हम सभी अधूरे हैं। तो अपने उसे अधूरेपन को दूर करने के लिए आपकी शरण में हैं। हम सभी पतित हैं। आप पतित पावन हैं, ऐसा जानकार के हम आपकी शरण में आए हैं ।प्रभु यह सारा विश्व धर्मात्मा बने। कोई दुराचारी ना हो बल्कि सब धर्मात्मा हों और सब सुखी रहें। किसी के पास किसी प्रकार का कष्ट ना हो।

ॐ शांति शांति शांति !
अर्थात त्रिविध ताप की शांति हो जाए